वन्यजीवों की आपातकालीन बैठक

बृजेश कुमार पटेल

नाटक भाग-1

पर्दा उठता है

जंगल का दृश्य-

जंगल का राजा शेर अपनी गुफा में से बाहर निकल रहा है, तभी वहाँ पर उसके सभी मंत्री पहुँचते हैं और जंगल के राजा का अभिवादन - प्रणाम करते हैं! शेर-शेर भी अभिवादन करता है!

शेर लोमड़ी बहन तुम और मेरे सभी मंत्री बड़े चिन्तित दिखाई दे रहे हैं! क्या बात है?

मंत्रीमंडल- लोमड़ी और शेष सभी मंत्री भालू, बंदर, खरगोश, और कबूतर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुये कहते हैं-

महाराज! हम सभी लोग देश-विदेश घूमने गये थे और सभी वन्यजीवों, जलप्राणियों से मिले सभी बहुत चिन्तित हैं और अपनी-अपनी समस्याओं को हम लोगों के माध्यम से आप तक पहुँचाना चाहते थे, तो हम लोगों ने उनकी समस्याओं को सुना और आपके पास आये हैं।

शेर ने अपने मंत्रियों के माध्यम से वन्यजीवों व जलीय जीवों की बात को सुना और आपात कालीन बैठक बुलाई।

नाटक भाग-2

पर्दा उठता है

शेर अपने आसन पर विराजमान है। शेर के मंत्रीमंडल के अन्य सदस्य अपना-अपना स्थान ग्रहण करते हैं।

लोमड़ी-महाराज आपको और यहाँ उपस्थित सभी जन्तुओं को मेरा प्रणाम! महाराज! मुझे यह बताते हुए बहुत कष्ट हो रहा है कि आज सभी प्राणी घोर संकट में हैं पृथ्वी पर 8.7 करोड़ से भी ज्यादा जन्तु उपस्थित हैं और इनमें से प्रत्येक वर्ष 40,000 से ज्यादा जन्तु विलुप्त हो रहे हैं व प्रत्येक वर्ष 10,000 नये जन्तु खोजे जा रहे हैं।

आज अवैध व्यापार वन्यजीवों उत्पादों का शिकार के कारण ये जन्तु विलुप्ति के कगार पर हैं। आज संकटापन्न जन्तुओं में 30,000 जातियाँ शामिल हैं जिनमें डॉल्फिन की कई जातियाँ भी शामिल हैं। जीवविज्ञानियों का मानना है कि अब तक सभी जुन्तओं की 99.9 प्रतिशत जातियां विलुप्त हो चुकी है जो कि कभी धरती पर थीं।

इसके बाद दरबार में सभी जन्तु एक के बाद एक शेर के सम्मुख अपनी संख्या व समस्या के बारे में बताते हैं।

चीता-महाराज! भारत में अंतिम तीन बचे चीतों को शिकारियों द्वारा 1948 में मध्यप्रदेश में मार दिया गया। इस घटना को अभी 75 वर्ष नहीं हुए है अतः वैज्ञानिक भाषा में मुझे अभी विलुप्त नहीं कहा जा सकता है। मैं कुछ ही पलों में 104 किमी. प्रति घंटा की गति पकड़ सकता हूँ और मैं लगभग 33.3 मी.से. की गति दौड़ सकता हूँ। मैं भारत में पाया जाता था और मुझे एशियाई चीता कहा जाता था। 1952 में औपचारिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार कर लिया गया कि चीता भारत से लुप्त हो चुका है। अंतिम बार 1968 में भारत में मुझे देखा गया था। मैं दूसरे पशुओं की अपेक्षा लगभग 50 प्रतिशत अधिक गति से दौड़ सकता हूँ अब मैं केवल एशिया के ईरान में पाया जाता हूँ और ईरानी चीता के नाम से जाना जाता हूँ। मैं भारत के राजस्थान, गुजरात के अर्द्ध मरुस्थल और खुले स्थानों पर रहता था। अत्यधिक शिकार, घास के मैदान जंगलों का विनाश, अंतः प्रजनन का बढ़ना, भोजन की कमी प्राकृतिक वासस्थान का कम होना आदि के कारण मैं विलुप्त हो गया। मेरे 50-75 प्रतिशत बच्चे तीन महीने तक भी जीवित नही रह पाते हैं। नर व मादा का अलग-अलग रहना व शिकार करना भी विलोपन का कारण बना। कुल मिलाकर वर्तमान में पूरे विश्व में लगभग 10,000 चीते हैं। और मैं केवल अफ्रीका तथा एशिया में हूँ। नामीबिया में लगभग 2500 चीते हैं। भारत में भी कई दशक पहले 20,000-30,000 तक चीते हुआ करते थे पर अब एक भी दिखाई नही देते।

डॉल्फिन- महाराज! भारत देश ने मुझे अपना राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया है। मैं भारत के पवित्र, गंगा नदी में व भारत के पड़ोसी देशों में पाई जाती हूँ। चम्बल, गंडक और ब्रह्मपुत्र में भी पाई जाती हूँ अब मेरी संख्या 2000 से भी कम बची है। बांधों के निर्माण, मछली मांस और पेस्टीसाइड्स के कारण संकट में हूँ मैं भारत के विलुप्त श्रेणी जलीय जीव में सम्मिलित हो गई हूँ। भारत में कुछ सौ ही डॉल्फिन बची हैं जिनमें से आधी विक्रमशीला गंगा डॉल्फिन शरण स्थली में संरक्षित हैं।

बैंगनी मेंढक- महाराज! मैं भारत के पश्चिमी घाट में रहता हूँ और उभयचर के सोग्लोसाइडी कुल का सदस्य हूँ। मैं वर्ष में अधिकतर भूमिगत और मानसून में केवल में प्रजनन के लिए जमीन की सतह पर आता हूँ। मैं

भी संकट में हूँ जिसका कारण है जंगल का विनाश, कॉफी के खेतों का कम होना ईलायची, और अदरक के बागान का कम होना है।

भारतीय हिमालयन बटेर- महाराज! मैं हिमालयी बटेर साधारणत 6-12 के समूह में रहता हूँ और पैदल चलता हूँ मैं घासों के बीजों, रसदार फल बेरीज कीटों को खाना पसन्द करता हूँ मेरी दशा भी शिकार और भूमि परिवर्तन के कारण बुरी है। मैं भी अति संकटापन्न जाती हूँ और भारत के उत्तराखण्ड के उत्तर-पश्चिम हिमालय के क्षेत्रों में पाया जाता।

इण्डियन हॉर्न बिल- मैं विशाल हॉर्नबिल नेपाल, भारत, दक्षिणपूर्वी एशिया, महाद्वीप, सुमात्रा के इंडोनेशियाई द्वीप पर पाई जाती हूँ। मैं छोटे स्तनधारियों, पक्षियों छोटे रेंगने वाले जन्तु कीटों को खाती हूँ। मैं लायन टेल्ड मकाक लघुपुच्छ वानर के साथ घूमती हूँ। मैं भी वासस्थान के विनाश और शिकार के कारण आई.यूसीएन की लाल सूची में संकट ग्रस्त जाति में सम्मिलित हूँ।

शिवाथेरियम- महाराज! मेरे शरीर की ऊँचाई 7 फीट हैं और मैं भी भारत के जंगल मैं रहता था। मैं भारत में खोजा विशाल जंगली जानवर था। मुझें हिन्दु देवता शिव के नाम पर शिवाथेरियम कहते थे। मैं भारत का लम्बा और तीव्रतम भीमकाय जानवर था जो कि कभी यहाँ पाया जाता था।

सुमात्रियन गैंडा- महाराज! मैं भी भारत का विलुप्त प्राय जन्तु हूँ। मैं दो सींगों वाला छोटा गैंडा और वर्तमान में डाई सेरोहिनसकुल की जाति में सम्मिलित हूँ। मैं विलुप्त प्राय गैंडा कभी भारत और पूर्वी एशियायी देशों में घूमा करता और रहता था। अब मैं अति संकट जाति में सम्मिलित हूँ और आकलन के अनुसार, मेरी संख्या मात्र 275 से भी कम, भारत के पड़ोसी देशों में पायी जाती है।

पिंक हेडेड डक- महाराज! मैं गुलाबी सिरों वाली बत्तख बड़ी मोटी, काली-भूरे रंग की थी। मैं भारत के सुन्दर पक्षियों में से एक थी। मैं लम्बी गर्दन वाली बत्तख कभी पूरे भारत में पायी जाती थी लेकिन मेरी सुन्दरशक्ल, ने मुझको अति संख्या में शिकार किये जाने वाले पक्षियों में शामिल कर दिया अत्यधिक शिकार के कारण मैं भारत के विलुप्त प्राय पक्षियों में शामिल हो गया।

भारतीय हाथी- महाराज! अफ्रीकी हाथी की तुलना में मेरी औसतन ऊँचाई 7 से 12 फीट व वजन 3,600 से 5,000 किग्रा व त्वचा का रंग धूसर से भूरा व विविध रंग का होता है। मैं जंगल में रहता हूँ और जंगली क्षेत्रों जैसे- बांदीपुर, मानस, मदूमलाई, कार्बेट, पलामू, नागर होल, और पेरीयार में रहता हूँ। वर्तमान में 38,000 से 51,000 हाथी भारतीय उप महाद्वीप में हैं, मुझे भी मेरे दाँतों के लिए मार दिया जाता है, मेरे ऊपर अत्यधिक अत्याचार, वास स्थान, चारे का खात्मा व ट्रेन हादसों, करेन्ट, शिकारियों की गोली के शिकार होने के कारण मेरी भी संख्या तेजी से घट रही है। इस समय भारत में हर वर्ष सैकड़ों हाथी मारे जाते रहे हैं। आईयूसीएन के अनुसार, पिछले 10 वर्षो में हाथियों के हत्या में दोगुने की बढ़ोत्तरी हुई है। व हाथी दाँत तिगुनी संख्या में बरामद किये गये है।

बंगाल टाइगर- महाराज! मैं भी कभी पूरे एशिया में घुमा करता था। लेकिन पिछले 100 वर्ष में बढ़ती मानव जनसंख्या ने मेरे प्राकृतिक वास स्थान को 93 प्रतिशत से भी कम कर दिया है। मेरी संख्या लगातार घटती जा रही है मुझे भी मेरे चमड़े खाल, नाखूनों के लिए मारा जा रहा है।

भारतीय गैंडा- महाराज! मेरी ऊँचाई 1.6 मीटर से 1.8 मीटर और वजन 1600 किग्रा से 2200 किग्रा तक होता है मैं असम में पाया जाता हूँ। दूसरे जानवरों की अपेक्षा मेरे शरीर पर बाल नहीं पाये जाते और औसतन जीवन काल 47 वर्ष होता है। मैं हिमालय की पहाड़ियों और भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों मे पाया जाता हूँ। मुझे भी शिकारी और मेरे सींगों, खाल के लिए मार रहे हैं। मैं भी संकटापन्न प्राणियों मे शामिल हो गया हूँ। दुनिया के एक सींग वाले गैंडों की 2/3 आबादी असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में है।

लायन टेल्ड मकाक-महाराज! भारत में मेरी संख्या 2500 बची है। मैं तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और भारत के दक्षिण, पश्चिम क्षेत्रों में पाया जाता हूँ। गैर कानूनी ढंग से मेरा शिकार व मेरे प्राकृतिक वास स्थान को नष्ट करने से मेरी संख्या लगातार घट रही है।

तिब्बती हिरण- महाराज! साधारणतः मुझे चीरू भी कहते हैं, मैं विलुप्ति के कगार पर हूँ मेरा लोमचर्म बहुत मुलायम होता है मेरे लोम चर्म से बनी शॉल 16000 डॉलर की बेची जाती है, हर साल अवैध ढंग से मेरे शिकार व हत्या से प्रति वर्ष 20000 की संख्या में हम लोगों को मारा जा रहा है। हमारा क्षेत्र प्रतिबन्धित है, फिर भी चोरी छिपे शिकार किया जा रहा है।

साईबेरियन बाघ- महाराज! मैं इस ग्रह पर पाये जाने वाले सभी बाघों में पूर्णतया माप में सबसे बड़ा हूँ। मेरी संख्या अत्यधिक कम हो गयी है। और केवल 20 साइबेरियन बाघ बचे हैं। आईयूसीएन के अनुसार, रूस में 360 साइबेरियन बाघ 21वीं सदी के अन्त तक पाये जाते थे। प्राकृतिक वास स्थान के नष्ट होने और शिकार आदि कुछ प्रमुख कारण हैं जिससे मेरी संख्या में निरन्तर कमी दर्ज की जा रही है और मैं विलुप्ति की श्रेणी में शामिल हूँ।

लॉगरहेड टर्टल- महाराज! मैं लागरहेड कच्छप काले सागर, भूमध्य सागर और अटलांटिक सागर में निवास करता हूँ, कुछ दशक पहले मेरी संख्या में हो रही कमी के प्रमुख कारण मेरा मांस और कवच का बाजार भाव था। अब मैं ऐसे लोगों के साथ रह रहा हूँ जो समुद्र बालू तट को बर्बाद कर रहे हैं। मेरे लिए सबसे बड़ा खतरा सागर के बालू तटों का बढ़ता तापमान है जो कि हमारे लिंग निर्धारण में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। ऐसे बालू तट जो कि अत्यधिक गरम होते हैं वे मादा जनसंख्या में वृद्धि करते हैं। मैं भी विलुप्ती के कगार पर हूँ।

मण्डारिन डक- महाराज! मैं ब्रिटेन के झीलों और तालाबों में पायी जाती हूँ। मैं मूलतः पूर्वी एशियाई देशों की निवासी जैसे चीन, जापान, और कोरिया से सम्बन्धित हूँ। मैं जंगल के नजदीक जलाशयों में पायी जाती हूँ। ऐसे स्थानों पर पानी की कमी मेरी संख्या में घटोतरी को बढ़ावा दे रहा है और मैं विलुप्त श्रेणी में शामिल हूँ।

पर्वतीय गोरिल्ला- महाराज! जायरे, युगाण्डा और रिवांडा विश्व में ऐसे स्थान हैं जहाँ पर मैं अत्यधिक घने जंगलों में रहता हूँ। खेती करने के लिए निरन्तर वृक्षों और वनों की कटाई ने मुझे विलुप्ति के कगार पर ढकेल दिया है।

जकास पेंग्विन- महाराज! मैं अफ्रीका की एक मात्र पेंग्विन पक्षी हूँ। मैं अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका नामीबिया में सामान्यतः पायी जाने वाली समुद्री पक्षी हूँ मेरी निभरता समुद्री जीव प्राणीयों पर है। मेरे निवास क्षेत्र में

लगातार मछली पकड़ने के कारण मेरे लिए पर्याप्त भोजन की कमी हो रही है और मैं भी विलुप्ति के कगार पर हूँ।

ग्रेट हार्सशो बैट- मैं विशाल घोड़े की नाल जैसा चमगादड़ जाति का हूँ। मेरी संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। ब्रिटेन में कुल 18 चमगादड़ की जातियां हैं जिसमें सभी संकटापन्न है। मैं भी खतरे की श्रेणी के निकट हूँ मेरे बसेरा वाले स्थानों जैसे खोखले, पुराने वृक्षों और पुरानी ईमारतों का विनाश, मेरी संख्या में अवनति का कारण जमीन के छोटे खेतों व वन भूमि को वृहद् स्तर पर खेती करने के लिए उपयोग में लाना भी मुझपर बुरा प्रभाव डाल रहा है। पौधों पर कीटनाशकों के छिड़काव के कारण, रसायनों का छिड़काव, कीटों को मारने के लिए जो पौधों पर रहते हैं। जो कि इन चमगादड़ों के भोजन के स्रोत है ये कारण चमगादड़ों की संख्या में कमी व विलोपन के प्रमुख कारण हैं।

सफेद पूछ वाला गिद्ध- महाराज! मैं व्हाइटटेल्ड ईगल पूरे भूमण्डल पर ज्यादा संख्या पर पाया जाता था, जब मनुष्य ने वेटलैण्ड, जलाशयों को कीटनाशको और दूसरे रसायनों का छिड़काव प्रारम्भ नहीं किया हुआ था। ग्लोब के मध्य पूर्व में मेरी संख्या सबसे कम है। मैं भोजन, मछली की तलाश में कई भौगोलिक स्थानों को पार कर जाता हूँ। फलस्वरूप विषैली मछलियों को खाने के कारण मैंने पतले खोल या अनिषेचित अण्डे देना प्रारम्भ कर दिया जो कि बहुत आसानी से टूट जाते थे। आज मेरे रहने व अण्डे देने के स्थान आधुनिक वन तकनीकों के प्रयोग में लाने के कारण नष्ट हो गये। यद्यपि मैं पूरी तरह से ब्रिटेन में 1900 सदी के अन्त तक विलुप्त हो गया, लेकिन अब भी मैं स्कॉटलैण्ड में 1975 के बाद पुनः प्रवेश के कारण अस्तित्व में हूँ।

कबूतर- महाराज! प्राचीनकाल में मैं संदेश पहुंचाने का कार्य करता था आज मेरा शिकार किया जा रहा है, कुए ढ़के जा रहे हैं, मेरे वास स्थान जैसे पीपल, बरगद के वृक्ष की संख्या में कमी आदि मेरी संख्या में भी कमी का कारण बन रहा है।

पाण्डा- महाराज! मैं संकटापन्न श्रेणी में हूँ और घोर संकट में हूँ। मुझे चीन में कानून के द्वारा विशेष सुरक्षा प्रदान किया गया है। मुझे आज चिड़ियाघरों में रखा गया है। वैज्ञानिक लोग अध्ययन में लगे है कि कैसे और किस तरह से मुझको विलुप्त होने से पहले बचाया जा सके। मैं विलुप्ती के कगार पर, बीमारी प्रदूषण और सीमित वासस्थान होने से हूँ। मानव गतिविधियाँ मेरे विलुप्ति के प्रमुख कारण है। लोगों को अब बदलना होगा। और लम्बा इन्तजार करना बेईमानी और बहुत बुरा होगा।

सिन्धु नदी की अन्धी डाल्फिन- महाराज! मैं सिन्धु नदी जो कि पाकिस्तान में होकर बहती हैं, में पायी जाती हूँ। इस नदी में इस देश के द्वारा सारा कचरा इसमें डाला जा रहा है। और इससे मेंरा वासस्थान विषैला हो गया है। चूंकि मैं विशेष क्षेत्रीय हूँ और केवल इसी नदी में पायी जाती हूँ। अन्य दूसरे स्थानों पर नहीं मैं दूसरी नदियों में भोजन और पानी के पी.एच. मान में परिर्वतन के कारण नहीं रह पाती हूँ। मेरी तरह ऑस्ट्रेलिया में पायी जानी वाली हेक्फॉर्स डाल्फिन प्रशान्त महासागर के समुद्र तटीय विशेष क्षेत्रों में रहती हूँ। मैं भी नाव की टक्कर मछुवाही और पानी में खनन के कारण खतरे में हूँ।

मेस्केरीन पेट्रेल- महाराज! मैं भी एक संकट ग्रस्त समुद्री पक्षी हूँ मुझे भी आईयूसीएन द्वारा लाल सूची में संकटग्रस्त प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। मेरी संख्या शिकार और प्रकाश प्रेरित होने व मृत्यु दर के कारण लगातार घट रही है। हाल ही में ब्रिटिश ऑर्निथोलॉजिस्ट क्लब छाया चित्रण के एक नवीनतम बुलेटिन के समाचार पत्र में 33 मेस्केरीन पेट्रेल देखे जाने का वर्णन किया गया है।

गौरैया- महाराज! मैं गौरैया नर मादा अलग-अलग और जीवन अवधि 3 से 13 वर्ष होती है अक्सर मैं मड़हों बंगला और कंक्रीट की बनी ईमारतों में अपना घोसला बनाती हूँ। विश्व स्तर पर मेरी संख्या बड़ी तेजी से घट रही है। इंग्लैण्ड के देहाती क्षेत्रों में 1970 के दशक तक 47 प्रतिशत घट गई थी, शहरी और उप नगरीय क्षेत्रों में यह आंकड़ा 60 प्रतिशत का था। लन्दन में 60 प्रतिशत, ग्लासगो में 99 प्रतिशत तक व और हेमवर्ग में 77 प्रतिशत तक घट गयी है। और यूके के लाल संरक्षण सूची में मेरा नाम दर्ज है। भारत में भी आईसीएआर के पक्षी सर्वेक्षण के मुताबिक आन्ध्रप्रदेश में 80 प्रतिशत, और केरल, गुजरात, राजस्थान में 20 प्रतिशत जबकि समुद्र तटीय क्षेत्रों में 70 से 80 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है।

लोमड़ी ने कहाँ अब अन्त में गिद्ध भाई बचे हैं, आप आये और महाराज के सम्मुख अपनी समस्या रखें।

भारतीय गिद्ध- महाराज! भारत में मेरी 9 जातियाँ पायी जाती हैं। पशुओं को दी जाने वाली डाइक्लोफेनेक, एक्सोटोन व कृषि में उपयोग की जाने वाली बेन्जामिन व कृषि में उपयोग की जाने वाले बेन्जामिन हैक्साक्लोराइड नामक दवा के प्रयोग का प्रभाव हम गिद्धों पर पड़ा है। मैं अपने वजन का 20 प्रतिशत भोजन की मात्रा खा सकता हूँ। मैं मुरदाखोर हूँ और घोर संकट में हूँ।

लोमड़ी ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया और अब मैं महाराज से कहना चाहूंगी कि महाराज कुछ जन्तु जो दूसरे देश में बहुत दूर थे, नहीं पहुँच पाएं, और कुछ जो अत्यधिक संकटग्रस्त जन्तु है, केवल कुछ संख्या में बचे हैं। उनको नहीं बुलाया गया क्योंकि कही शिकारी बीच रास्ते में ही मार दे। बल्कि उनकी समस्याओं को नोट कर लिया है। और लगभग यहाँ पर रखी गयी समस्याओं के समान ही उनकी समस्याएं हैं। अतः मैं उनको आपके सम्मुख नहीं रख रही हूँ।

शेर- जंगल का राजा, लोमड़ी बहन तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! आपने अच्छे से सभा का संचालन किया और वन्य जीवों व जलीय जीवों कि समस्याओं को अच्छे से रखा। मेरी भी अपनी समस्या है। मेरे शिकार-जंगली सूअर, चितल, सांभर और नीलगाय तथा अन्य संख्या घटने से मेरा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा मैं केवल अब भारत के सासनगिर वन गुजरात में पाया जाता हूँ। जब वन का राजा खुद सुरक्षित न हो तो प्रजा कैसे सुरक्षित हो, मैं सभी समस्याओं को विभिन्न देशों के प्रधानमंत्रियों एवं राष्ट्रपति एवं वैज्ञानिकों के सम्मुख रखूंगा ओर समाचार पत्रों के माध्यम से अपनी समस्या को लोगों तक पहुंचाऊंगा, जिससे लोग जागरूक हो और जीयो और जीने दो की बात को सही साबित करें।

श्री बृजेश कुमार पटेल
ग्राम-सिरौली, पोस्ट-कुम्भापुर, वि.ख. रामनगर
तहसील-मड़ियाहूं, जिला-जौनपुर 222 137
[मो. : 09565774662 एवं 08382831904;
ई-मेल : brijeshkumarp83@gmail.com]